इतिहास के पन्नों से

मई दिन

:: लेखक ::

सुजित कुमार बनर्जी

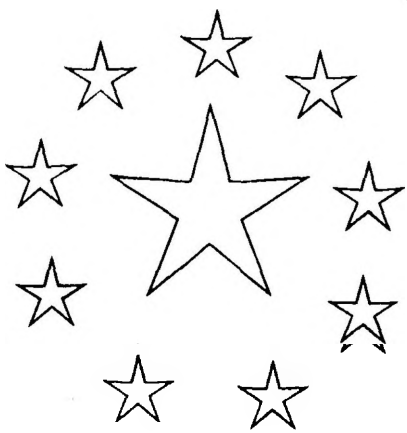

छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ

मई दिवस एक इतिहास

मे डे, मई दिवस, मई दिन। विश्वव्यापी मजदूर वर्ग का एक महत्वपूर्ण दिन है, पिछले संघर्षों का मूल्यांकन और नये संघर्ष की प्रतिज्ञा लेने का दिन, दुनिया के मेहनतकश एकता का दिन है मई दिवस।

दुनिया के मजदूर एक हो यह आवाज पहले उठाया था कम्युनिष्ट घोषणा पत्र, यह आवाज विश्व के हर देश में मेहनतकशों का आवाज बन गया है, मई दिवस में हर देश के मजदूरों ने इस आवाज से संघर्ष का आवाज बुलन्द करते रहे।

मई दिवस समाजवाद के लक्ष्य में मजदूर वर्ग का विश्वव्यापी संघर्ष का एक मील स्तंभ है। मई दिवस समारोह विश्वभर में मजदूर दिवस के रूप में पूंजीवादी युग में ही पूंजीपति शोषण के विरोध में मनाया जाता है। आयें हम सबसे पहले संक्षिप्त रूप में मानव समाज के शोषण का सर्वेक्षण करते हैं।

वानर से नर बनने की लम्बी प्रक्रिया थी जिसमें हजारों साल बीत गये। चार पाँवों पर चलने वाला वानर सीधा खड़ा हो गया और उसके दोनों अगले पंजे दोनों हाथों के सामान हो गये। और बाद में औजार निर्माण करने वाला पशु यानि मनुष्य बन गया। मनुष्य का अपना जीवन यात्रा के साधनों को इकट्ठा करने की कोशिशों के कारण मानव समाज के विभिन्न चरणों का विकास हुआ। आदिम साम्यवाद पहला चरण था, जहाँ गुजारा के लिये उतना पर्याप्त उत्पादन नहीं होता था कि अतिरिक्त उत्पादन हो सके। तब शोषण नहीं था।

दासता के युग में दासों के श्रम से उत्पादित सभी चीजों को मालिक हड़प लेता था, पर दासों को उत्पादन करने की ताकत बरकरार रखने के लिये मालिक को खिलाना पिलाना पड़ता था। शोषण से त्रस्त दासों ने अपने मालिकों के खिलाफ विद्रोह किये और दासता प्रथा खत्म हुए। इसके बाद सामन्तवाद आया, जब कृषक दास भूस्वामियों के लिये उसकी जमीन पर काम करता था पर अपने जीवन यापन के लिये कृषक दासों को जमीन का एक टुकड़ा दिया जाता था, जिसमें वह अपने श्रम से अपने गुजारा के लिये अनाज पैदा कर सकता था। कृषक दास को जमीन का जो टुकड़ा दिया जाता थावह बहुत ही घटिया किस्म का होता था। उसका ज्यादातर श्रम भूस्वामी की जमीन पर लग जाता, वास्तव में मध्य युग कृषक दास की कुत्ते के समान गले में पट्टे बांधना होता था 1640 की इंगलैण्ड की क्रान्ति और 1789 के फ्रांसीसी क्रान्ति ने कृषक दासों को सामंती बंधनों से मुक्ति

किसान और मजदूर बना दिया। पूंजीवादी युग और पूजीवादी शोषण की शुरुआत हुयी।

19 वीं सदी में अमेरिकी उद्योगो का अपूर्व विकास हुआ। उस समय काम टे कम करने के लिए मजदूर वर्गों की माँग राजनीतिक महत्व बहुत बढ़ गया। देवस के साथ इस माँग का महत्वपूर्ण संबंध है। अमरीका में उद्योगों के विकास साथ-साथ काम के घंटे कम करने का आंदोलन चारों तरफ फैल गया। शुरू- में मजदूरी बढ़ाने की माँग को लेकर अमरीका में हड़ताल शुरू हुई। लेकिन जब कोई माँग पत्र बनाया गया तभी काम के घंटे कम करने की माँग सबसे ऊपर रही क तरफ शोषण की मात्रा बढ़ने लगा, दूसरे तरफ मजदूर की हालत असहनीय हो । मजदूरों की यह असहनीय स्थितियों के विरूद्ध आंदोलन छेड़ दिया। पहले दूरों को 18 से 20 घंटे काम करना पड़ता था। सन 1820 से 1840 तक काम के कम करने का आंदोलन चल रहा था, रोज 10 घंटे काम करने का नियम चालू ो की मांग हर उद्योगों में की गई। गृह निर्माण कार्यों में लगे मजदूरों ने 10 घंटे र के माँग को लेकर हड़ताल की इस संघर्ष के दौरान दुनिया का पहला ट्रेड यन फिलाडेलफिया के मेकेनिकों का यूनियन बना (सन 1827 में)। सन 1834 यूयार्क रोटी कारखाने के मजदूरों ने हड़ताल के समय अपने पत्रिका में एक खबर । "मिश्र देश में जो गुलामी की प्रथा चालू थी उससे भी बदतर स्थिति रोटी खाना की मजदूरों की है।" 24 घंटे के अंदर 20 घंटे काम करना पड़ता था। इन इलाकों में 10 घंटे काम के लिए आंदोलन बहुत तेजी से फैल रही थी। सन 38 में उद्योगों में जो संकट आया उससे आंदोलन व्यापक हुआ। राष्ट्रपति नबुरेन अमरीका में सरकारी श्रमिकों को दस घंटे काम के समय निर्धारित करने लिये बाध्य हो गया। कुछ उद्योगों में दस घंटे काम के समय निर्धारित होने के श्रमिकों ने 8 घंटे काम के लिये आंदोलन शुरू करने लगे। सन 1850 के बाद यूनियन बनाने के काम में तेजी आ गया और इसके फलस्वरूप 8 घंटे काम के ये जोरदार आंदोलन होने लगा। काम के घंटे कम करने का आंदोलन सिर्फ मेरिका मे ही नहीं बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था के तहत जहाँ भी मजदूरों का शोषण रहा था वहाँ आंदोलन तेज होने लगा।

"काम के 8 घंटे, आराम के 8 घंटे और मनोरंजन एवं अध्ययन के 8 घंटे" मांग का सूत्रपात अमरीकी मजदूर फेडरेशन ने सबसे पहले किया। उन लोगों ने अक्टूबर 1884 को एक प्रस्ताव के जरिये यह मांग की, कि मई 1886 से 8 घंटे का र्य दिवस एक कानून के जरिये विधि सम्मत ढंग से शुरू किया जाय।

19वीं सदी में अमरीका उद्योगों का विकास हुआ परन्तु 19वीं सदी के शेष में उद्योगों में मंदी आती रही, इस अवधि में काम के घंटे 8 के लिये बेरोजगारी और असहनीय स्थितियों के विरूद्ध आंदोलन फैल गया।

पहले यह संगठन अमरीकी मजदूर वर्ग के एक जुझारू संगठन के रूप में सामने आया। सन 1861-62 में पहला गृह युद्ध के तुरन्त बाद इस तरह के कुछ ट्रेड यूनियन जातीय यूनियन में शामिल हो गये। 20 अगस्त सन 1866 में सभी ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधि एक सम्मेलन में सम्मिलित होकर जातीय मजदूर यूनियन गठित किया। जातीय संगठन के नेता एच. सिलभिस हुए। सिलभिस उम्र में नौजवान थे, उस समय श्रमिक आंदोलन में उसका एक महत्वपूर्ण स्थान था। सिलभिस पहला इंटरनेशनल नेताओं के साथ संपर्क रखे हुए थे। इंटरनेशनल के साधारण परिषद के साथ जातीय मजदूर यूनियन के संपर्क बनाने में उनका प्रभाव काम में आया। जातीय यूनियन की प्रतिष्ठा के उपलक्ष में जो सम्मेलन बुलाया गया उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया गया। इस देश के श्रमिकों को पूंजीवाद के शोषण से मुक्त कराने पहला और प्रधान जरूरत ऐसा कानून की जिसमें अमरीका के हर जगह में काम के समय 8 घंटे हो। इस महान लक्ष्य तक पहुँचने लिए हम अपनी पूरी ताकत लगाने का संकल्प ले रहे हैं। सम्मेलन में 8 घंटे काम की मांग को लेकर आंदोलन तेज करने का प्रस्ताव लिया गया। जातीय मजदूर यूनियन के आंदोलन के फलस्रूप 8 घंटे श्रम समिति स्थापित हुए यह संगठन 8 घंटे काम मांग को लेकर आंदोलन तेज कर दिया। 8 घंटे श्रम आंदोलन के सफल नेता थे एक मजदूर जिसका नाम था बुरा शयार्ड।

यह श्रमिक आंदोलन ही बाद में राजसत्ता हासिल करने के लिए संग्रामी और ठोस आंदोलन का रूप ले सकता था, लेकिन संशोधनवादी नेताओं ने इस आंदोलन के रूप को ही बदल दिया।

सिलभिस हर वक्त इंटरनेशनल नेताओं के साथ सम्पर्क बनाए रखे हुए थे। जातीय मजदूर यूनियन के सभापति के रूप में उसका जो प्रस्ताव था उसी प्रस्ताव के तहत अंतर्जातीय श्रमिक आंदोलन के साथ सहयोगिता का प्रस्ताव और साधारण परिषद में अपने प्रतिनिधि भेजने का प्रस्ताव ग्रहण किया गया। लेकिन जातीय मजदूर यूनियन के सम्मेलन होने के पहले ही सिलभिस का मृत्यु हो गया। सिलभिस का मृत्यु होने के बाद जातीय मजदूर यूनियन टूट गया।

1873 की मंदी के बाद हर दस वर्ष पर मंदी जातदी रही। इस समय काम के घंटे कम करने हेतु, बेरोजगारी और असहनीय स्थितियों के विरूद्ध आंदोलन फैल गया। 1881 से 1888 के बीच प्रत्येक वर्ष औसतन 500 हड़तालें और तालाबंदियाँ हुई और औसतन 1,50,000 मजदूरों ने भाग लिया। 1885 में हड़ताल के आँकड़े 700 हो गया और हड़ताल में भाग लेने वाले मजदूरों की संख्या 2,50,000 हो गयी 1886 में हड़तालों की संख्या पिछले साल की तुलना में लगभग दूनी होकर 1572 हो गये तथा हड़ताल में भाग लेने वालों की संख्या 6,00000 हो गयी।

हड़ताल का मूल केन्द्र शिकागो शहर था, पर यह हड़ताल न्यूयार्क, वल्दीमोर, वाशिंगटन, मिलवाकी, सेंटलुईस, पीट्सबर्ग आदि में फैल गया।

1 मई 1886 की हड़ताल में करीब 5,00000 मजदूरों ने भाग लिया जिसका मुख्य केन्द्र शिकागो शहर था। प्राय: 1,80,000 मजदूरों ने विशेष रूप से जो निर्माण कार्य से युक्त थे, 8 घंटे की लड़ाई जीत ली। इस हड़ताल से मजदूर आंदोलन को आगे बढ़ाने में बहुत प्रभाव पड़ा था। इस जीत और संघर्ष के साथ-साथ अनेक ट्रेड यूनियनों का जन्म हुआ, इस महान संघर्ष से अन्तर्राष्ट्रीय मई दिवस का जन्म हुआ, जिस दिन 1886 को पेरिस में दूसरे इंटरनेशनल को स्थापित करने के लिये सम्मेलन आयोजित हुई थी उस दिन की विश्व के श्रमिकों के पर्व के रूप में मान्यता दी गई।

1886 में जो हड़ताल हुई उसके कारण मेहनतकशों के विरूद्ध पूंजीवाद ने दुनिया में सबसे घृणित अपराध किया। इतिहास में इस अपराध को सबसे घृणित शब्दों में लिखा गया। सन 1886 में पूरा अमरीका जो हड़ताल हुई उसमें शिकागो शहर सबसे ऊपर था।। मई को शिकागो शहर में एक सुविशाल सभा आयोजित किया गया। श्रमिक आंदोलन के इतिहास में इतनी सुविशाल सभा कभी नहीं हुआ। शहर के संगठित मजदूर कार्य बंद करके इस सम्मेलन में शामिल हो गये। इस हड़ताल की एक विशेषता यह भी है कि असंगठित मजदूर भी आंदोलन में शामिल हो गये। अमरीकी श्रमिक वर्ग के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण अध्याय था लेकिन मालिक पक्ष चुपचाप बैठे नहीं थे। 2 मई 1886 में शिकागो में मैककार्मिक हार्वेस्टर कारखाना में हड़ताली श्रमिकों के ऊपर पुलिस गोली चला दी जिससे दो श्रमिक शहीद हो गये और बहुत से श्रमिक गंभीर रूप से घायल हुए। पुलिस के इस पाशविक हत्या के विरोध में 4 मई हेमार्केट में एक सभा आयोजित किया गया, आयोजित सभा में पुलिस अचानक मजदूरों के ऊपर हमला बोल दिया। लेकिन इस बार

मजदूरों ने डटकर मुकाबला किया और पुलिसी आक्रमण के विरूद्ध प्रतिरोध किया जिसमें सात पुलिस के सिपाही खतम हो गये और चार मजदूर शहीद हो गये। हे-मार्केट वीर शहीदों के खून से लाल हो गये, यह संघर्ष के मैदान में संग्रामी झण्डा शहीदों का खून से लतपत हो गया और यह खून से लतपत झण्डा एक देश से दूसरे देश विश्व के हर मेहनतकशों के पास पहुँच गये। हे-मार्केट की घटना को केन्द्र मान करके सरकार एक उन्मादपूर्ण और संगठित ढंग से झुठे अभियोग का अत्यधिक अन्यायपूर्ण मामला चलाने के बाद पार्सन्स, स्पाईश, फीसर और एंजेल को 11 नवंबर 1888 को फांसी दे दी। नीबें, स्च्वाबऔर फील्डेन को लम्बी कैद की सजा दी गई। लिंग को कालकोठरी में मरे पाये गये जिसे पुलिस ने आत्महत्या बताया। न्यायालय अमरीका के मजदूर आंदोलन को खत्म करने के अपने निर्मम प्रयास में गद्दारों एवं साधारण जल्लादों के स्तर तक उतर गये। सम्पूर्ण संसार के मजदूरों ने हे-मार्केट के बर्बरतापूर्ण दुखदायी घटना के विरोध में आवाज बुलन्द किये।

24 जुलाई 1886 को पेरिस में दूसरे इंटरनेशनल की स्थापना में 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के शताब्दी समारोह को मनाते हुए उस कांग्रेस ने दूसरे इंटरनेशनल की स्थापना के तत्काल बाद जो मुख्य निर्णय लिया गया वह था सभी देशों में मजदूर वर्ग के अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के रूप मई दिवस मनाने प्रारंभ करना। जिसका मुख्य उद्देश्य 8 घंटे का कार्य दिवस था, दूसरे इंटरनेशनल की स्थापना जिस कांग्रेस में हुई उसमें ऐतिहासिक प्रस्तावों में दूसरी बातों के साथ-साथ यह भी कहा गया :-

"एक निश्चित तिथि पर एक साथ ही तमाम देशों के हर शहरों में इस प्रकार बड़े-बड़े प्रदर्शन संगठित किये जायेंगे और उस सहमत दिवस पर मजदूर सरकारी अधिकारियों से यह माँग करेंगे कि कानून के जरिये कार्य दिवस को कम करके 8 घंटे का कार्य दिवस लागू किया जाय।तथा पेरिस में कांग्रेस के दूसरे प्रस्तावों को अमल में लाया जाय।" अमरीकी मजदूर फेडरेशन ने दिसम्बर 1888 में सेंटलुईस में आयोजित अपनी कांग्रेस में 1 मई 1890 को इसी प्रकार के प्रदर्शन करने का फैसला किया। अत: इस तिथि को अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के लिये अपनाया गया है।

विभिन्न देशों के मजदूर अलग-अलग देश की खास परिस्थिति द्वारा लादी गई हालातों के तहत प्रदर्शन करेंगे। इसमें एक बात साफ है यदि मई दिवस काम करने का दिन पड़ता है तो उसका हड़ताल करना। लेकिन जर्मन में बिस्मार्क का समाजवाद-विरोधी कानून इस समय प्रचलित था, इसलिये जर्मन पार्टी अपने सदस्यों को आदेश दिया कि वे मई दिवस पर हड़ताल न करें। बल्कि संध्या के समय

मिटिंग करके ही समारोह मना लें। अंग्रेजों ने मई के पहले रविवार को समारोह मनाया, फ्रांसीसी, आस्ट्रीयाई और हंगरी के मजदूरों ने मई दिवस पर हड़ताल कीऔर सड़कों पर मजदूर वर्गों की एक जुटता का प्रदर्शन पुलिस की बर्बरता का मुकाबला करते हुए किया। यूरोपीय और अमरीकी सर्वहारा वर्ग अपनी जुझारू ताकती को नये सिरे से योजनाबद्ध कर रहे थे। वह एक तत्कालिक लक्ष्य के लिए एक झण्डे के नीचे, एक सेना के रूप में सामने आ रहे थे। वह लक्ष्य था कानून पास करके 8 घंटे का प्राथमिक कार्य-दिवस लागू करना जैसा कि 1886 में इंटरनेशनल के जनेवा कांग्रेस ने घोषणा की थी और 1886 में पेरिस में आयोजित मजदूरों की कांग्रेस ने पुनः घोषणा की थी।

मई-दिवस मजदूर वर्ग के स्वतंत्रता के लिये राजनीतिक संघर्ष का प्रतीक है जिसे अवश्य ही लगातार जारी रखना चाहिए और मई दिवस सर्वहारा वर्ग को आगे बढ़ाने का एक सूचक है जिसकी परिणिति अवश्य ही समाजवाद के लिये संघर्ष में उसकी अंतिम विजय में होगा।

भारत में आँदोलन

जब 8 घंटे कार्य दिवस की माँग करते हुए दुनिया के किसी भी जगह में हड़ताल नहीं हुई थी, उस समय हावड़ा के रेल्वे मजदूरों ने 8 घंटे की कार्य दिवस की माँग करते हुए हड़ताल की थी। उस समय हड़ताल में 1100 मजदूरों ने भाग लिया था, हालाँकि इतिहास में इसका कोई ठोस सबूत नहीं है यह हड़ताल सफल हुआ कि नहीं लेकिन इसमें शक की कोई बात नहीं थी कि यह हड़ताल स्वत: स्फूर्त थी।

हावड़ा रेल्वे की यह हड़ताल यद्यपि स्वत: स्फूर्ति और असंगठित थी परन्तु भारतीय मजदूर वर्ग की पहली हड़ताल थी।

8 घंटे कार्य दिवस की माँग 1880 में बम्बई की जी.आई.पी. रेल्वे कारखाना के मजदूर वर्ग ने शुरू किया था।

22 मार्च 1889 को ब्रिटेन में लैंकाशायर का कपड़ा मजदूरों ने काम के घंटे निश्चित करने के भारतीय मजदूरों को माँग के समर्थन में एक संगठित और बड़ा जुलूस निकाला, ब्रिटिश मजदूरों के दो नेताओं ने वहाँ भाषण दिया था। 1890 अप्रेल माह में बम्बई कपड़ा मिल के दस हजार मजदूरों को सभा लोखाण्डे के नेतृत्व में हुआ था और दो महिला मजदूरों ने भाषण दिया था।भारत के मजदूर आंदोलन में यह एक नया इतिहास था, इससे पहले कहीं भी महिला मजदूर नेतृत्व के लिए सामने नहीं आयी थी। सभा ने विश्राम के लिए साप्ताहिक छुट्टी की माँग की और मिल मालिकों ने यह माँग मान लिये। यह विजय भारत के संगठित मजदूर आंदोलन का पहला विजय था। इतिहास में यह विजय स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया। इस विजय के साथ-साथ एक नाम सामने आया और वह है एन.एम. लोखाण्डे।

इस आँदोलन के फलस्वरूप 24 सितम्बर 1890 को भारत सरकार एक आयोग गठित किया। सापुर जी आयोग के एक सदस्य थे और लोखाण्डे उसके प्रतिनिधि थे। आयोग ने 1891 में एक कारखाना कानून की सिफारिश की, जिसे 1 जनवरी 1892 से लागू किया गया।

इस कानून के अनुसार भारत में पहली बार महिला मजदूर के लिए प्रतिदिन 11 घंटे काम का समय निर्धारण किया गया तथा डेढ़ घंटे का अन्तराल तय किया गया था और बाल मजदूरों के लिये 7 घंटे काम का समय तय किया गया था लेकिन पुरूष मजदूरों के लिए काम के घंटे अभी तक तय नहीं हुए थे।

1905 में लैंकाशायर के मजदूरों ने फिर से सरकार के पास एक प्रतिनिधि दल यह माँग करते हुए भेजा कि भारत में पुरूष मजदूरों के लिए भी काम के घंटे तय किया जाय। इस समय शापूर जी और लोखाण्डे का मृत्यु हो गया, इससे आंदोलन को बहुत बड़ी चोट पहुँची। लोखाण्डे एक संघर्ष का नाम था। इस समय नेतृत्व के लिए कोई विकल्प सामने नहीं आया जो इस आंदोलन को आगे बढ़ा सके। लेकिन तब जातीय कांग्रेस का जन्म हो चुका था।

सन 1905 से 1908 तक मजदूर वर्ग जो भी हड़ताल किये थे उसका राजनैतिक महत्व था। कलकत्ता के प्रेस मजदूरों हड़ताल के समय जो नारे लगाये थे इससे प्रमाण होता है कि मजदूरों ने राजनैतिक संघर्ष में अपने को जोड़ लिया था। इस समय बरिशाल के बस्ती मजदूरों और जमालपुर के रेल मजदूर हड़ताल के समाने थे और इसका नेतृत्व दे रहा था जातीय आंदोलन के चरम पंथी नेतृत्व। 1908 में बाल गंगाधर तिलक को उनको अपने समाचार पत्र में प्रकाशित एक लेख के कारण सरकार छः वर्ष की कारावास की सजा सुना दी। तिलक के गिरफ्तारी पर बम्बई के कपड़ा मजदूरों ने आम हड़ताल की, यह हड़ताल छः दिन तक चली। मजदूरों के साथ पुलिस का सीधा मुठभेड़ हुआ, जो मजदूर वर्ग में राजनैतिक संचेतना का एक प्रकाश था। इस हड़ताल में कोई आर्थिक माँग नहीं थी। मजदूर वर्ग 8 घंटे काम की माँग को राजनैतिक स्तर पर उठा नहीं सके। भारत के मजदूर वर्ग इस हड़ताल के तहत भारत के राजनैतिक नेताओं का आपसकामी चरित्र के पास-पास एक मजबूत और संगठित ताकत के रूप में उभरकर सामने आया। इस परिवर्तन की मुख्य भूमिका में था भारत के सर्वहारा वर्ग। उनके सचेत राजनीतिक, जन संघर्ष विकसित हो चुका था। वर्ग के रूप में देखने से भारत के सर्वहारा वर्ग समाज में एक ताकत के रूप में पैदा नहीं हो सका था। भारत में औद्योगिक विकास तब भी नहीं हुआ था और ट्रेड यूनियन आंदोलन भी कमजोर था। बम्बई के कपड़ा मजदूरों का यह संघर्ष भारतीय सर्वहारा वर्ग की पहली राजनीति संघर्ष थी।

सन 1908 को बम्बई के कपड़ा मजदूरों ने हड़ताल के दौरान एक महत्वपूर्ण इतिहास रचा था। इन मजदूरों ने रास्ते-रास्ते में पुलिस का प्रतिरोध किया और पुलिस एवम् मिलिट्री के साथ मुकाबला किया। इस तरह वे लोग क्रांति की बीज बोये। इस लड़ाई में बहुत से मजदूर शहीद हो गये। पहला शहीद मजदूर थे बम्बई कपड़ा मिल का एक मजदूर। इन शहीदों का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा रहेगा। इस संघर्ष से फायदा यह हुआ कि सन 1911 में मिल मालिकों को पुरू

मजदूरों के लिये 12 घंटे का कार्य दिवस और बाल मजदूरों के लिये छः घंटे का कार्य दिवस स्वीकार करना पड़ा। भारत में मजदूर वर्गों के लगातार संघर्ष से पूंजीपतियों में हड़कम्प मच गया। ये लोग अहमदाबाद में चल रहे मजदूर आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने के लिये गाँधी जी को बुलाये। तेज चल रहे आंदोलन एक सुधार पंथी नेता के नेतृत्व से सही दिशा से भटक गया और अहमद्राबाद मजदूर आंदोलन को राजनैतिक आंदोलन से अलग करके रखा गया।

बम्बई के कपड़ा मिलों की पचास यूनियनों के संयुक्त सम्मेलन में 10 घंटे कार्य दिवस की माँग करते हुए एक मजबूत संघर्ष छेड़ने का प्रस्ताव के आधार पर कपड़ा मिल के मजदूरों ने लगातार एक महीने तक हड़ताल की और आखिर मालिकों को 10 घंटे का कार्य दिवस की मांग को स्वीकार करना पड़ा।

1920 में बम्बई मजदूरों की एक सभा में संशोधनवादी नेतृत्व के दबाव के फलस्वरूप 8 घंटे का कार्य दिवस के प्रस्ताव को पास नहीं किया गया। 1920 में भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के पहले सम्मेलन में 8 घंटे कार्य दिवस के मांग को रखने का कोई प्रस्ताव नहीं रखा गया। लेकिन इस सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग की एकता, एक जुटता कायम करने की दिशा में पहली आवाज उठाई गई। सम्मेलन में यह कहा गया कि मजदूर वर्ग जो संघर्ष शुरू किये हैं इसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व सुदुरगामी रहेगा। यह मजदूर वर्ग की तुलनात्मक परिकल्पना का प्रतीक था जो साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय संघर्ष में अपनी भूमिका की तलाश कर रहा था। और यह राष्ट्रीय संघर्ष कोई अलग घटना नहीं था बल्कि रूस की सम्पूर्ण अक्टूबर क्रांति के प्रत्यक्ष प्रभाव इस पर था। रूस में अक्टूबर क्रांति के बाद विश्व साम्राज्यवाद की श्रृंखला टूट गयी और एक नये युग का सूत्रपात हुआ। मजदूर वर्ग अपने लक्ष्य की ओर संघर्ष के जरिये आगे बढ़ रहे हैं ये इसे आंदोलन को तोड़ने के लिये भारत सरकार 10 हजार पाऊण्ड खर्च करके एक सरकारी कार्यालय शिमला में स्थापित की।

सन 1920 में चारों तरफ हड़ताल शुरू हो गयी। सिर्फ कलकत्ता औद्योगिक शहर में ही 89 हड़ताल हुई और देश के हर राजनीतिक नेताओं ने समर्थन किया। सितम्बर 1920 में असहयोग आंदोलन ने देश में एक नयी राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी। इससे मजदूर वर्गम में आत्म-विश्वास पैदा हुआ और शोषक वर्ग के खिलाफ आंदोलन और तेज हो गया। उस समय सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावपूर्ण हड़ताल था कलकत्ता ट्राम कम्पनी के मजदूरों का। ट्राम कम्पनी के उन मजदूरों को दिनभर में

15 घंटे काम करना पड़ता था, 2500 मजदूर 8 घंटे कार्य दिवस की मांग को लेकर हड़ताल किए और ट्रेड यूनियन का गठन किया मजदूर वर्ग एकता को कायम रखते हुए संघर्ष और तेज कर दिया।

सन 1921 में भारत में मजदूर वर्ग ने एक महत्वपूर्ण भूमिका लेकर संघर्ष के मैदान में पाँव रखे। सन 1921 में मजदूर वर्ग ने 32 बार हड़ताल की जिसमें 6 ,00351 मजदूरों ने हिस्सा लिया था। यह आंकड़ा सरकारी है। इसके अलावा बाहर में भी बहुत से हड़ताल संगठित रूप में हुई होगी। 1921 में असहयोग आंदोलन के फलस्वरूप असम के चाय बगीचे के हजारों मजदूर बगीचे को छोड़कर असहयोग आंदोलन में शामिल हो गये। लेकिन ब्रिटिश सरकार इस आंदोलन को तोड़ने के लिए मिलिट्री बुलायी, मजदूरों के ऊपर गोली चलाई गई। शहीदों के खून से धरती लाल हो गया, असंख्य मजदूर शहीद हो गये। असम के चाय बगीचा के मजदूरों के समर्थन में अन्य औद्योगिक क्षेत्र के मजदूरों ने संघर्ष छेड़ दिये। इस तरह सर्वहारा वर्ग एकता कायम करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़े।

मजदूर आंदोलन के विकास के साथ-साथ सन 1921 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की अधिवेशन झड़िया में सम्पन्न हुई। मजदूर वर्ग अपने पूरे ताकत के साथ इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। भयभीत होकर ब्रिटिश शासक आधुनिक हथियार से लैस पुलिस द्वारा सम्मेलन को घेर लिया। सन 1921 में जातीय आंदोलन के एक सुन्दर विकास के रूप में असम के चाय बगीचा के मजदूरों की हड़ताल से भारत के एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक आंदोलन में तेजी पकड़ते जा रही थी। लेकिन जातीय आंदोलन के नेताओं ने भारत में तेज हो रहे क्रांतिकारी मजदूर संघर्ष को देश की राजनीतिक आंदोलन के साथ शामिल नहीं किये, परन्तु मजदूर वर्ग ने भी चुपचाप नहीं बैठे रहे। जब जातीय कांग्रेस स्वराज्य के ऊपर कोई प्रस्ताव ग्रहण करने में समर्थ नहीं हुए तब मजदूर वर्ग झड़िया अधिवेशन में यह घोषणा किया कि भारत द्वारा स्वराज्य के ऊपर एक प्रस्ताव भी ग्रहण किया गया।

1921-29 के दौरान कुल हड़ताल की संख्या 1739 था, इनमें करीब 50 लाख से भी ज्यादा मजदूरों ने हिस्सा लिया था।

भारत में मई दिवस सन 1923 में मनाया गया। 1923 में सबसे पहले मद्रास के समुद्री तट पर काम. सिंगारवेलु चेट्टियार की अध्यक्षता में सभा सम्पन्न हुई थी। सभा में यह माँग भी की गई कि मई दिवस पर सरकार द्वारा छुट्टी घोषित किया जाय

। का. सिंगारावेलु चेट्टियार के घर पर ला झण्डा फहराया गया था। मजदूर वर्ग के संघर्ष की राह को साम्राज्यवादी शोषक दलाल पूंजीपति वर्ग ने तीव्र विरोध किया और इनके द्वारा जन संघर्ष को दबाने के लिये व्यापक षड़यंत्र रचा गया। जिससे मजदूर नेताओं को गिरफ्तार और झूठा केस में फंसाया जा सके।

ब्रिटिश सरकार मजदूर आंदोलन से आशंकित होकर आंदोलन के ऊपर हमला शुरू कर दी। सरकार ने मजदूर नेताओं को जिन्होंने आंदोलन में सक्रिय थे गिरफ्तार कर लिया और उसके विरूद्ध झूठा षडयंत्र रचकर मुकदमा चलाया गया। 1923 में पंजाब से बहुत से प्रांतों में मई दिवस मनाया गया। 1926 में इंडियन सिमेन्स यूनियन के नेतृत्व में भारतीय नाविकों ने ब्रिटेन के हाइड पार्क में मई दिवस मनाया।

1926 में भारत के मजदूर आंदोलन तेज होता गया और मजदूर संघर्षशील वर्ग के रूप में सामने आये। इस समय बहुत से ट्रेड यूनियन बनी और पूंजीवादी शोषण के खिलाफ एक के बाद एक संगठित रूप में हड़ताल हुई, आर्थिक मांगों को लेकर मजदूर वर्ग ये हड़ताल किये इस आंदोलन को कुचलने के लिये शोषक वर्ग मजदूरों की हत्या, बिनाकानूनी कार्यवाही किये गिरफ्तारी तथा छटनी करना आदि हथियारों को लेकर मजदूरों के ऊपर टूट पड़े।

1926 में लाहोर में अब्दुल मजीद के नेतृत्व में टांगा मजदूरों ने भी मई दिवस मनाया। इसके प्रचार के लिये कई पोस्टर लगाये गये और लाल झण्डा फहराया गया। मीर अब्दुल मजीद भारत के पहला कम्युनिष्ट षड़यंत्र मामला में आरोपी थे जिन्हें दण्डित किया गया। मीराठ षड़यंत्र मामले में उन्हे 7 साल की सजा सुनाई गयी। सन 1927 में कलकत्ता में मई दिवस मनाया गया। खिदिरपुर बंदरगाह के क्रेन मजदूरों की एक ट्रेड यूनियन गठित हुई। इस यूनियन के संगठक थे एक मराठी मजदूर। इस यूनियन के एक कार्यकर्ता थे भारत के कम्युनिष्ट पार्टी के प्रतिष्ठाता कामरेड मुजफ्फर अहमद हड़ताली क्रेन मजदूरों ने रंजी स्टेडियम में मई दिवस मनाया।

1927 में बम्बई में मई दिवस मनाया गया। शाम को मजदूरों ने लाल झण्डा लेकर एक जुलूस निकाला, यह जुलूस शहर को घुमते हुए सभा केन्द्र में आकर मिला। इस जुलूस को नेतृत्व दे रहे थे एन.एम. जोशी, जी.आर. थेगाड़ी, इसमें मजदूरों ने आवाज उठायी कि 8 घंटे से ज्यादा काम नहीं, हफ्ता में पगार सहित एक दिन छुट्टी देना होगा। श्री थेगाँडी, एन.एम. जोशी, फिलिक स्प्राट

प्रमुख मजदूर नेता इस सभा को संबोधित किया।

सन 1927 में मद्रास में मई दिवस मनाया गया। 1927 में भारत के मजदूर वर्ग अंतर्राष्ट्रीय एकता का एक मिशाल स्थापित किया। अमरीका में साम्राज्यवादी शासक झुठा मामला में बेगुनाह मजदूर साक्को भेजी को फांसी में लटकाया। भारत के मजदूर वर्ग ने इसके प्रतिवाद किये। 1927 में मजदूर नेता सत्यप्रिय बैनर्जी मई दिवस में दि मे डे माम से एक किताब प्रकाशित किया। भारत में मई दिवस के ऊपर यह पहला पुस्तक था।

फरवरी 1927 में साक्कोभेंजी केस का विरोध करते हुए कलकत्ता में मजदूरों का जंगी जुलूस निकाला गया जुलूस के सामने थे मजदूर नेता नीरोद चक्रवर्ती। 1927 में भारत के मजदूर आंदोलन में एक महत्वपूर्ण घटना घटी। बंगाल, नागपुर, खड्गपुर के 40,000 रेल मजदूरों ने हड़ताल की, कुछ मांगों को लेकर यह हड़ताल चार महीने तक चली। पुलिस इस हड़ताल को तोड़ने के लिये हड़तालो मजदूरों पर गोली चलाई जिसमें मजदूर सहित आम जनता भी शहीद हो गये बहुत से मजदूर संगठन इस समय हड़तालो मजदूर संगठन को मदद किये और हड़तालो साथी को आर्थिक मदद भी किये। इसके बाद महत्वपूर्ण घटना बाउरिया जूट मिल मजदूरों की थी। 1928 का यह संघर्ष मजदूरों का एक उज्जवल और सृजनशील संघर्ष के रूप में इतिहास में है। यह संघर्ष माह जुलाई से माह दिसम्बर तक चला। इसी से ही जूट मिल मजदूरों का संघर्ष शुरू हुआ। इस समय मजदूर आंदोलन के कम्युनिष्ट नेता और कर्मी व्यापक रूप से मजदूर आंदोलन को राजनैतिक स्तर तक ले जाने की एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1928 में भारत के विभिन्न प्रांतों में चल रहे मजदूर आंदोलन के समर्थन में ब्रिटिश कम्युनिष्ट पार्टी ब्रिटिश मजदूरों के संघर्ष में भारतीय मजदूरों का साथ देने को कहा। ब्रिटेन के लैंकशायर टेक्सटाइल्स मजदूरों ने इस एक जुटता के प्रतीक के रूप में एक लाख रूपये से अधिक भेजे थे।

1926 में ब्रिटिश शोषक सरकार ट्रेडडिसपिउट्स बिल एवं पब्लिक सेक्टर बिल पास करायी। इसका मूल लक्ष्य था कि मजदूर आंदोलन में नेतृत्व देने वाले नेताओं का दमन करना, तथा बाहर से आये मजदूर नेताओं को इस आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने से रोकना। इस बिल का कड़ा विरोध हुआ। सापुरजी ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य और कम्युनिष्ट पार्टी के सदस्य भी थे। लंदन में मई दिवस के दिन भाषण देते समय ब्रिटिश सरकार सापुर जी को गिरफ्तार करके जेल भेज दी।

भारत में मजदूर आंदोलन के अंदर क्रांतिकारी आंदोलन उभर रहा था। मजदूर आंदोलन एक राजनीतिक लक्ष्य रखते हुए संघर्ष को तेज कर रहा था और कम्युनिष्ट नेताओं ने इसका नेतृत्व प्रदान कर रहे थे। सन 1928 के दौरान जो हड़ताल हुई वह कुल 3,15,00,000 कार्य दिवस की थी, जो कि विगत 5 वर्षों की कुल संख्या से अधिक थी।इस आंदोलन का प्रारंभ बम्बई से हुआ तथा सारे देश में फैल गया। इन सभी हड़तालों में बम्बई के टेक्सटाइल्स मिल का हड़ताल प्रभावपूर्ण थी। इसमें सभी 150 हजार मजदूर अप्रेल से अक्टूबर तक यानि छः महीने तक सभी प्रकार की जोर जबरदस्ती और हिंसा के मुकाबले खड़े रहे। यह हड़ताल शुरू में काम बंद और वेतन कटौती के खिलाफ थी। जब हड़ताल तोड़ने की विभिन्न कोशिशों के बाद भी नहीं टूटी तो सरकार मजदूरों की कुछ माँगे मान ली।

1928 में बम्बई, कलकत्ता, लाहौर में मई दिवस मनाया गया। लेकिन बम्बई में मई दिवस के लिए प्रतिबंध लगा दिया गया। 1928 में मई दिवस कलकत्ता में बड़े पैमाने पर मनाया गया श्रद्धानंद पार्क से एक मील लम्बा मजदूरों का जुलूस निकला तो कलकत्ता के पुलिस आयुक्त ने 1862 के बंगाल अधिनियम की धारा 62 के तहत उस पर प्रतिबंध लगाना चाहा। कई नेताओंपर नोटिस जारी किया गया इसके बाद भी जुलूस कलकत्ता मैदान (वर्तमान शहीद मीनार) पहुँच गया और मृणाल क्रांति बोस की अध्यक्षता में सभा हुई। किशोरीलाल घोष,फिलिफ स्प्राट आदि ने भाषण दिया।

इसी वर्ष कलकत्ता के मजदूरों ने राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनके पण्डाल पर दो घंटे तक कब्जा रखी और अपनी माँगें वहाँ पेश की जो आर्थिक नहीं राजनीतिक थी। कलकत्ता के मजदूर अपनी नेताओं के भाषणों के जरिये यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिये कि वे चाहते थे राष्ट्रीय कांग्रेस पूर्ण स्वाधिनता को अपना लक्ष्य घोषित करें।

ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासक ट्रेड डिसपियुट्स बिल एवं पब्लिक सेक्टर बिल के जरिये मजदूर आंदोलन के ऊपर रोक लगाना चाहता था। इस समय बेन ब्रेडली, फिलिफ स्प्राट भारत में आकर मजदूरों के बीच काम कर रहे थे और मजदूर आंदोलन में भी हिस्सा ले रहे थे। इस प्रकार की परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार आशंकित हो उठी और हमला शुरू कर दी। 20 मार्च 1929 को मजदूर वर्ग के 32 नेताओं को गिरफ्तार किया गया और मेरठ में षड़यंत्र का मुकदमा चलाने के लिए लाया गया जो चार वर्ष से अधिक समय तक चलते रहा। उनके विरूद्ध राष्ट्रद्रोह का

अभियोग था ।

चार साल से विश्व के वृहत्तम और व्यय बहुल मुकदमा चलाकर मजदूर नेताओं को सक्त सजा देने के बावजूद ब्रिटिश सरकार मजदूर आंदोलन को तोड़ न सकी। मेरठ षड़यंत्र मामले में गिरफ्तार मजदूर नेताओं के समर्थन में भारत के हर प्रांत में मजदूरों के बीच विक्षोभ संगठित हो रहा था और नेताओं की मुक्ति के लिये संघर्ष की तैयारी चल रही थी । मजदूर नेताओं के गिरफ्तारी के 40 दिन बाद ऐतिहासिकमई दिवस था । उस साल व्यापक रूप से मई दिवस मनाया गया । बम्बई, कलकत्ता, करांची और कानपुर में मई दिवस के दिन बड़े-बड़े जुलूस निकाले गये । बम्बई में गिरनी कामगार यूनियम के नेतृत्व में मई दिवस मनाया गया । उसी दिन करीब 40,000 मजदूर बड़ी जुलूस निकाले पुलिस इस जुलूस को तोड़ने के लिए मजदूरों के ऊपर लाठी चार्ज किया फिर मजदूर अपना हौसला बुलंद रखते हुए जुलूस को सभा के रूप में परिवर्तित किये । इस सभा में मजदूरों ने संकल्प लिया कि पूंजीवादी व्यवस्था को खतम करना है और लूट खसोट के राज्य को समाप्त कर मजदूरों का राज्य स्थापित करना है । सभा में मेरठ षड़यंत्र मामले में गिरफ्तार मजदूर नेताओं की मुक्ति की मांग एवं सरकार द्वारा किये जा रहे अत्याचार के विरूद्ध मेंविरोध प्रकट करने का संकल्प लिया गया ।

सचमुच मेरठ षड़यंत्र मुकदमा ने स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की व्यापक धारा के साथ नवोदित मजदूर आंदोलन के संबंध कायम करने में भी मदद की । यह बात दर्ज है कि जिस दिन भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी पर चढ़ाया गया था उस दिन मेरठ के बंदी नेताओं ने उनके सम्मान में क्रांति गीत गाते हुए अदालत की कार्यवाही बंद करवा दी । इसका अर्थ अदालत की मानहानि और दूसरे घोर परिणाम था, परन्तु वे इससे हिचके नहीं । यह दूसरे क्रांतिकारी नेताओं के साथ एक जुटता की कार्यवाही थी, जिनमें भगतसिंह जैसे कुछ लोग मार्क्सवादी विश्व दृष्टि अपनाने लगे थे ।

मेरठ षड़यंत्र मामला कुछ क्षण तक मजदूर आंदोलन को भले रोक सका लेकिन पूरा दबाने में असमर्थ रहे । इसका प्रमाण 1929 में खड़गपुर रेल्वे मजदूरों ने 8 घंटे काम की मांग को लेकर हड़ताल की और 1930 में पेशावर में आंदोलनरत मजदूर किसान के साथ पुलिस का सीधा मुठभेड़ हुआ । 1930 में एक महत्वपूर्ण घटना यह थी कि अमरिका में भारतीयों कम्युनिष्टों ने न्यूयार्क और ब्रिटिश आफिस के सामने "भारत में हत्या राज बंद करो" पोस्टर लेकर प्रदर्शन किये । पुलिस ने तीन

प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया। इसी साल इंग्लैण्ड में इंडियन फ्रिडम लीग के नेता सकथवाल के नेतृत्व में मेरठ षड़यंत्र मामले में बंदियों को मुक्ति के लिए एक जुलूस निकाला गया।

1931 से 1933 साल तक भारत में विभिन्न प्रांतों में मजदूरों ने मई दिवस मनाये और हर जगह मजदूरों ने यह मांग रखी कि मेरठ षड़यंत्र मामले में बंदियों को तुरन्त रिहा किया जाय। इस दशक में अन्यान के जेल के बंदियों ने मई दिवस मनाना शुरू किया।

मई दिवस 8 घंटे काम की मांग को लेकर जन्म लिया, लेकिन भारत में मई दिवस राजनीतिक मांग लेकर मनाया गया। भारत मे मजदूर आंदोलन कभी भी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से अलग नहीं था। मजदूरों ने आर्थिक मांगों के साथ-साथ राजनीतिक आंदोलन में भी शामिल थे। हे-मार्केट में श्रमिक आंदोलन को जिन लोगों ने खून की नदी में डुबो देना चाहते थे वे लोग व्यर्थ हुए। संघर्ष एक देश से दूसरे देश में फैलते गया और सर्वहारा ताकतों के सामने पशु-शक्ति को हार स्वीकार करना पड़ा। मजदूर आंदोलन को कभी-कभी पूंजीपतियों ने रोकने में सफल हुए लेकिन पूरी तरह खत्म करने में असफल रहे इसका प्रमाण इतिहास में है। जब तक मजदूर अपना राज कायम न करे तब तक यह संघर्ष जारी रहेगा।

अब दिन वह प्यारा आया है,
जिस दिन का हम इन्तजार किया,
इन्तजार की घड़ियाँ बीत गई,
ढल गई रात भोर हुई,
मई दिन हमारा आया।

यह दिन बड़ा रंगीला है,
आने से मन भर जाता है,
मजदूर दुनिया के सब मिल कर,
इस दिन को सब अपनाा है।
जरा याद करो वह कुर्बानी,
सौ साल पुरानी मर्दानी,
हे मार्केट के सड़कों पर जब खून बह जाय तुफानी,
उस खून की दौलत झंडा हमारा आज भी लाल निराला है।

यह खुश रहने का दिन है मगर,
इस दिन खुशियाँ मनाओ नहीं,
लेंगे कसम इस दिन पर,
हम जुल्म और सहेंगे नहीं.....।

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी.एम.एस.एस. आफिस, दल्ली-राजहरा,
जि. दुर्ग (छ. ग.) 491228
मुद्रक : साहू प्रिंटिंग प्रेस, मेन रोड, दल्ली-राजहरा
प्रकाशन काल : जनवरी 04 सहायता राशि : 1.00 रूपये